➢ समास शब्द दो शब्दों 'सम्' (संक्षिप्त) एवं 'आस' (कथन/शब्द) के मेल से बना है जिसका अर्थ है—संक्षिप्त कथन या शब्द। समास प्रक्रिया में शब्दों का संक्षिप्तीकरण किया जाता है।

➢ **समास** : दो अथवा दो से अधिक शब्दों से मिल कर बने हुए नए सार्थक शब्द को **समास** कहते हैं।

➢ **समस्त-पद / सामासिक पद** : समास के नियमों से बना शब्द **समस्त-पद** या **सामासिक शब्द** कहलाता है।

➢ **समास-विग्रह** : समस्त पद के सभी पदों को अलग-अलग किए जाने की प्रक्रिया **समास-विग्रह** या **व्यास** कहलाती है; जैसे— 'नील कमल' का विग्रह 'नीला है जो कमल' तथा 'चौराहा' का विग्रह है— चार राहों का समूह।

➢ समास रचना में प्रायः दो पद होते हैं। पहले को पूर्वपद और दूसरे को उत्तरपद कहते हैं; जैसे—'राजपुत्र' में पूर्वपद 'राज' है और उत्तरपद 'पुत्र' है। समास प्रक्रिया में पदों के बीच की विभक्तियाँ लुप्त हो जाती हैं, जैसे—राजा का पुत्र = राजपुत्र। यहाँ 'का' विभक्ति लुप्त हो गई है। इसके अलावा कई शब्दों में कुछ विकार भी आ जाता है; जैसे—काठ की पुतली = कठपुतली (काठ के 'का' का 'क' बन जाना); घोड़े का सवार = घुड़सवार (घोड़े के 'घो' का 'घु' बन जाना)।

समास के भेद

समास के छह मुख्य भेद हैं—

1. अव्ययीभाव समास *(Adverbial Compound)*
2. तत्पुरुष समास *(Determinative Compound)*
3. कर्मधारय समास *(Appositional Compound)*
4. द्विगु समास *(Numeral Compound)*
5. द्वंद्व समास *(Copulative Compound)*
6. बहुव्रीहि समास *(Attributive Compound)*

पदों की प्रधानता के आधार पर वर्गीकरण—

पूर्वपद प्रधान	—	अव्ययीभाव
उत्तरपद प्रधान	—	तत्पुरुष, कर्मधारय व द्विगु
दोनों पद प्रधान	—	द्वंद्व
दोनों पद अप्रधान	—	बहुव्रीहि *(इसमें कोई तीसरा अर्थ प्रधान होता है)*

1. **अव्ययीभाव समास** : जिस समास का पहला पद *(पूर्वपद)* अव्यय तथा प्रधान हो, उसे अव्ययीभाव समास कहते हैं; जैसे—

पहचान : पहला पद अनु, आ, प्रति, भर, यथा, यावत, हर आदि होता है।

पूर्वपद–अव्यय	+	उत्तरपद	=	समस्त-पद	विग्रह
प्रति	+	दिन	=	प्रतिदिन	प्रत्येक दिन
आ	+	जन्म	=	आजन्म	जन्म से लेकर
यथा	+	संभव	=	यथासंभव	जैसा संभव हो
अनु	+	रूप	=	अनुरूप	रूप के योग्य
भर	+	पेट	=	भरपेट	पेट भर के
प्रति	+	कूल	=	प्रतिकूल	इच्छा के विरुद्ध
हाथ	+	हाथ	=	हाथों-हाथ	हाथ ही हाथ में

Scanned with CamScanner

2. तत्पुरुष समास : जिस समास में बाद का अथवा उत्तरपद प्रधान होता है तथा दोनों पदों के बीच का कारक-चिह्न लुप्त हो जाता है, उसे तत्पुरुष समास कहते हैं; जैसे—

राजा का कुमार = राजकुमार,
धर्म का ग्रंथ = धर्मग्रंथ,
रचना को करने वाला = रचनाकार

तत्पुरुष समास के भेद : विभक्तियों के नामों के अनुसार छह भेद हैं—

(i) कर्म तत्पुरुष *(द्वितीया तत्पुरुष)* : इसमें कर्म कारक की विभक्ति 'को' का लोप हो जाता है; जैसे—

विग्रह	समस्त-पद
गगन को चूमने वाला	गगनचुंबी
यश को प्राप्त	यशप्राप्त
चिड़ियों को मारने वाला	चिड़ीमार
ग्राम को गया हुआ	ग्रामगत
रथ को चलाने वाला	रथचालक
जेब को कतरने वाला	जेबकतरा

(ii) करण तत्पुरुष *(तृतीया तत्पुरुष)* : इसमें करण कारक की विभक्ति 'से', 'के द्वारा' का लोप हो जाता है; जैसे—

विग्रह	समस्त-पद
करुणा से पूर्ण	करुणापूर्ण
भय से आकुल	भयाकुल
रेखा से अंकित	रेखांकित
शोक से ग्रस्त	शोकग्रस्त
मद से अंधा	मदांध
मन से चाहा	मनचाहा
पद से दलित	पददलित
सूर द्वारा रचित	सूररचित

(iii) संप्रदान तत्पुरुष *(चतुर्थी तत्पुरुष)* : इसमें संप्रदान कारक की विभक्ति 'के लिए' लुप्त हो जाती है; जैसे—

विग्रह	समस्त-पद
प्रयोग के लिए शाला	प्रयोगशाला
स्नान के लिए घर	स्नानघर
यज्ञ के लिए शाला	यज्ञशाला
गौ के लिए शाला	गौशाला
देश के लिए भक्ति	देशभक्ति
डाक के लिए गाड़ी	डाकगाड़ी
परीक्षा के लिए भवन	परीक्षा भवन
हाथ के लिए कड़ी	हथकड़ी

(iv) अपादान तत्पुरुष *(पंचमी तत्पुरुष)* : इसमें अपादान कारक की विभक्ति 'से' *(अलग होने का भाव)* लुप्त हो जाती है; जैसे—

विग्रह	समस्त-पद	विग्रह	समस्त-पद
धन से हीन	धनहीन	ऋण से मुक्त	ऋणमुक्त
पथ से भ्रष्ट	पथभ्रष्ट	गुण से हीन	गुणहीन
पद से च्युत	पदच्युत	पाप से मुक्त	पापमुक्त
देश से निकाला	देशनिकाला	जल से हीन	जलहीन

Scanned with CamScanner

(v) संबंध तत्पुरुष *(षष्ठी तत्पुरुष)* : इसमें संबंधकारक की विभक्ति 'का', 'के', 'की' लुप्त हो जाती है; जैसे—

विग्रह	समस्त-पद	विग्रह	समस्त-पद
राजा का पुत्र	राजपुत्र	देश की रक्षा	देशरक्षा
राजा की आज्ञा	राजाज्ञा	शिव का आलय	शिवालय
पर के अधीन	पराधीन	गृह का स्वामी	गृहस्वामी
राजा का कुमार	राजकुमार	विद्या का सागर	विद्यासागर

(vi) अधिकरण तत्पुरुष *(सप्तमी तत्पुरुष)* : इसमें अधिकरण कारक की विभक्ति 'में', 'पर' लुप्त हो जाती है; जैसे—

विग्रह	समस्त-पद	विग्रह	समस्त-पद
शोक में मग्न	शोकमग्न	लोक में प्रिय	लोकप्रिय
पुरुषों में उत्तम	पुरुषोत्तम	धर्म में वीर	धर्मवीर
आप पर बीती	आपबीती	कला में श्रेष्ठ	कलाश्रेष्ठ
गृह में प्रवेश	गृहप्रवेश	आनंद में मग्न	आनंदमग्न

नोट : *तत्पुरुष समास के उपर्युक्त भेदों के अलावे कुछ अन्य भेद भी हैं, जिनमें प्रमुख है नञ् समास।*

नञ् समास : जिस समास के पूर्व पद में निषेधसूचक/नकारात्मक शब्द *(अ, अन्, न, ना, गैर आदि)* लगे हों; जैसे— अधर्म *(न धर्म)*, अनिष्ट *(न इष्ट)*, अनावश्यक *(न आवश्यक)*, नापसंद *(न पसंद)*, गैरवाजिब *(न वाजिब)* आदि ।

Scanned with CamScanner